# नेपाल में भारत विरोध

भारत के सबसे निकट पड़ोसी एवं विश्वसनीय मित्र राष्ट्र नेपाल आज भारत की अनुभवहीन एवं अदूरदर्शी राजनीतिक सत्ता के कारण भारत विरोधी गतिविधियों का अड्डा बनता जा रहा है। नेपाल में 'भारत विरोध', यह सुनकर आश्चर्य जरूर हो रहा होगा कि भारत और नेपाल प्राचीन काल से ही एक साझा सांस्कृतिक विरासत के कारण सहोदर भाई जैसे रहे हैं। यद्यपि नेपाल में कम्युनिस्ट आन्दोलन के पैर फैलाते समय ही यह विरोध भी प्रारम्भ हो गया था परन्तु माओवादियों के प्रभाव में बढ़ोत्तरी के साथ ही भारत विरोध मुखर होता गया। नेपाल के अन्दर ताजा विरोध नदी जल को लेकर प्रारम्भ हुआ है। पिछले कई सप्ताह से नेपाल के माओवादी उग्रवादियों ने उत्तर प्रदेश के जनपद महराजगंज और कुशीनगर के अन्दर गण्डक नदी के जल को, जो नहरों द्वारा सिंचाई के लिये उपयोग में लाया जाता था, रोक दिया है। नदी जल को रोकने से इन क्षेत्रों के किसान परेशान अवश्य हुए लेकिन इससे पहले कि हाहाकार की स्थिति पैदा होती दैवयोग से मानसून की अच्छी शुरुआत समय से पूर्व हो गई। अन्यथा न केवल इन जनपदों में कानून व्यवस्था का गम्भीर संकट पैदा होता वरन् नेपाल के साथ सम्बन्धों पर खतरनाक प्रतिकूल असर भी पड़ता। वैसे माओवादियों के वर्चस्व में आने के बाद से ही भारतनेपाल के सम्ब-न्धों में दरार पड़ने की आशंका सभी को थी, क्योंकि सभी माओवादी चाहे प्रचण्ड हों अथवा बाबूराम भट्टराई अथवा कोई अन्य, नेपाल को  चीन का एक उपनिवेश बनाने के लिए प्रारम्भ से ही उतावले दिखाई दे रहे हैं। उनका यह सपना तभी साकार भी हो सकता है जब भारत कमजोर होगा अथवा भारत और नेपाल के आपसी सम्बन्धों में कटुता आयेगी। माओवादियों द्वारा भारत की 1950 नेपाल के बीच सन्-'पीस एण्ड फ्रेण्डशिप' की ट्रीटी को समाप्त करने की बार बार-धमकी देना उसी कड़ी का हिस्सा है। यही नहीं नेपाल के हिन्दू चरित्र के साथ हुए खिलवाड़, नेपाल की एकता

और सम्प्रभुता के प्रतीक राजशाही को समाप्त करना भी उसी का हिस्सा था। बार-बार चेतावनी के बावजूद अगर नेपाल का राजनीतिक नेतृत्व आँखें मूँदकर इन सबकी अनदेखी कर रहा है तो उसके अस्तित्व को कोई बचा नहीं सकता। नेपाल के सन्दर्भ में तो यही लगता है कि अंधे को तो रास्ता दिखाया जा सकता है लेकिन जो जानबूझकर अन्धा होने का ढोंग कर रहा हो उसकी क्या स्थिति होगी, स्वयं और सहज अनुमान लगाया जा सकता है। नेपाल के अन्दर आज जो कुछ हो रहा है अथवा होने जा रहा है उसके दुष्परिणामों से दोनों बच नहीं सकते। भारत और नेपाल की राजनीतिक सत्ता वास्तविकता को समझने का प्रयास करे। माओवादियों द्वारा गण्डक नदी के पानी को रोककर भारत को जो सन्देश देने का प्रयास हुआ है वह स्पष्ट रूप से भारत विरोधी उनकी मानसिकता को ही प्रदर्शित करता है। इसमें सबसे आश्चर्यजनक भारत सरकार और स्थानीय प्रशासन की चुप्पी है। इससे पहले कि माओवादी चीन की मदद से माओलैण्ड के सपने को साकार करने के लिए खड़े हों, भारत सरकार और दोनों देशों की शान्तिप्रिय जनता को इनके मंसूबों को समाप्त करने के लिए खड़े हो जाना चाहिए।